रामधारी सिंह दिनकर
जीवन एवं साहित्यिक परिचय

जीवन-परिचय—जन-चेतना के गायक और क्रान्तिकारी कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रान्त के सिमरिया, जिला बेगूसराय (पुराना जिला मुंगेर) में **सन् 1908 ई०** में हुआ था। उन्होंने बी०ए० तक शिक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात् उन्होंने एक माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् उन्होंने बिहार सरकार के सब-रजिस्ट्रार एवं प्रचार विभाग के उपनिदेशक, मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में हिन्दी-विभागाध्यक्ष, 'भागलपुर विश्वविद्यालय' के कुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार के रूप में कार्य किया। वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे। **24 अप्रैल, 1974 ई०** में इस काव्य मनीषी का देहान्त हो गया।

साहित्यिक-परिचय—अपने राष्ट्रीय भाव से जनमानस की चेतना को नई स्फूर्ति प्रदान करनेवाले राष्ट्रीय कवि दिनकर छायावादोत्तर काल के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। उन्हें प्रगतिवादी कवियों में भी सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। दिनकरजी की काव्यात्मक प्रतिभा ने उन्हें अपार लोकप्रियता प्रदान की। उन्होंने सौन्दर्य, प्रेम, राष्ट्रप्रेम, लोक-कल्याण आदि अनेक विषयों पर काव्य-रचना की, किन्तु उनकी राष्ट्रीय भाव पर आधारित कविताओं ने जनमानस को सर्वाधिक प्रभावित किया।

दिनकर को क्रान्तिकारी कवि के रूप में भी प्रतिष्ठा मिली। उन्होंने 'रश्मिरथी' एवं 'कुरुक्षेत्र' जैसी रचनाओं में अपनी जिस प्रतिभा का परिचय दिया है, वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

कृतियाँ—दिनकरजी मूलतः सामाजिक चेतना के कवि थे। उनके व्यक्तित्व की छाप उनकी प्रत्येक रचना में दृष्टिगोचर होती है। उनकी प्रमुख काव्य-रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

(1) रेणुका—इस कृति में अतीत के गौरव के प्रति कवि का आदर-भाव तथा वर्तमान की नीरसता से दुःखी मन की वेदना का परिचय मिलता है।

(2) हुंकार—इस काव्य-रचना में वर्तमान दशा के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है।

(3) रसवन्ती—इस रचना में सौन्दर्य का काव्यमय वर्णन हुआ है।

(4) सामधेनी—इसमें सामाजिक चेतना, स्वदेश-प्रेम तथा विश्व-वेदना सम्बन्धी कविताएँ संकलित हैं।

(5) कुरुक्षेत्र—इसमें 'महाभारत' के 'शान्ति-पर्व' के कथानक को आधार बनाकर वर्तमान परिस्थितियों का चित्रण किया गया है।

(6) उर्वशी, रश्मिरथी—इन दोनों काव्य-कृतियों में विचार-तत्त्व की प्रधानता है। ये दिनकर के प्रसिद्ध प्रबन्ध-काव्य हैं।

दिनकरजी की गद्य-रचनाओं में उनका विराट् ग्रन्थ 'संस्कृति के चार अध्याय' उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई समीक्षात्मक ग्रन्थ भी लिखे हैं।

Explained By-Arunesh SIR

Trick

रश्मि उर्वशी ने किया
परशुराम का वेट।

बापू के संग रेणुका शंख
बजाया लेट।।

कुरु साम में रस
भरा हुंकारों का वेट।।।

Gyansindhu Coaching Classes